२४: प्रतिपादन-६ : सजगता सहजता

दिनांक -१६/१०/२०११

सजगतापूर्ण सहजता सहित दिव्य मानवीयता, गठनपूर्ण, क्रियापूर्ण, आचरणपूर्ण संज्ञानीयतापूर्ण सहित ही दिव्य मानवीयता का प्रतिपादन है | यही सर्वोच्च कोटि के विकसित चेतना का प्रमाण है | विकसित चेतना का आरम्भ मानवीयतापूर्ण मानवत्व रूप में होता है, जिसका पुष्टि जागृत देवत्व में होता है | यही सतर्कता, श्रम का विश्राम स्थिति एवं क्रियापूर्णता है | इसका परिपूर्णता दिव्यत्व में होता है | यही सजगता, जागृतिपूर्णता एवं गंतव्य है | इस विधा में यह भी देखा गया है कि जीव चेतना से मानव चेतना श्रेष्ठ है | मानव चेतना से देव चेतना श्रेष्ठतर है | देव चेतना से दिव्य चेतना श्रेष्ठतम है | इस तथ्य का अवगाहन करने से मानव का महत्व समझ में आता है | अथवा जागृत मानव का महत्व समझ में आता है | इस क्रम में मानव चेतना ही जागृत चेतना का शुभारंभ है | साथ में देव चेतना सहित आश्वस्त होते हैं | मानव का सुख, शांति, संतोष पूर्वक जीना मानव चेतना, देव चेतना के संयुक्त रूप में ही होता है | देव चेतना में संतोष सहज अधिकार एवं आनंद की उपलब्धि है | ऐसा जीने के क्रम में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का प्रमाण परम्परा अर्थात पीढ़ी से पीढ़ी निर्वाह करता हुआ दिव्य मानव चेतना पूर्वक होता है | इस प्रकार मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना का प्रयोजन समझ में आता है | मानवीय चेतना में ही न्याय-अन्याय, धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य विधि का निष्कर्षात्मक विधि से आचरण होता है | अर्थात मानवीयतापूर्ण मानव न्याय संगत विधि से जीता है |

जिससे ही मानव परम्परा में उपकार करना बनता है | उपकार का तात्पर्य समझदारी को अगले पीढ़ी में अंतरित करना ही है | मानव सुख शांति पूर्वक जीता है, संतोष सहित रहता है | मानव चेतना पूर्वक जीता हुआ मानव पुत्रेषणा, वित्तेषणा, लोकेषणापूर्वक उपकार करता है | देव चेतना में वित्त एवं पुत्रेषणा गौण हो जाता है और लोकेषणा प्रधान रहता है | साथ में देव चेतना सहित सुख, शांति, संतोष पूर्वक जीना सहज हो जाता है, आनंद रहता है | जबकि दिव्य चेतना विधि से एषणात्रय को गौण मानते हुए उपकार प्रधान विधि से जीना होता है | सुख शांति संतोष आनंद पूर्वक जीने कि निरंतरता हो जीता है | यही मुख्य रूप से विकसित चेतना प्रकट होने का स्वरूप है | इस क्रम में यह भी जीते हुए देखा गया है कि विकसित चेतना विधि से जीने से अपराध प्रवृत्ति का शमन तथा भ्रममुक्त होना होता है | यही पवित्र मानव का स्वरूप है | पवित्र मानवीयता ही विकसित चेतना है | विकसित चेतना पूर्वक ही मानव परम्परा अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था रूप में फलित हो पाता है | सर्वमानव सुखी होने, सुख, शांति, संतोष, आनंदपूर्वक जीने का यह एकमात्र रास्ता है | यही संज्ञानीयतापूर्वक जीने का फलन है | सतर्कता ही संज्ञानीयता एवं सजगता ही संज्ञानीयतापूर्णता है | यही परिष्कृत एवं परिष्कृतिपूर्ण संचेतना है| संज्ञानीयता ही मानव परम्परा का वैभव है | इसी आधार पर मानव ज्ञानावस्था में गण्य है |

आदर्शवाद ज्ञान के बारे में चर्चा करते हुए रहस्यमयी ब्रह्मवाद में फंस गया | जबकि भौतिकवाद के अनुसार ज्ञान से लेन देन नहीं है बल्कि परहेज है | इन सभी आकलन के साथ यह निर्धारित होता है कि मानव सुखी होने की अपेक्षा में विकसित चेतना को अपनाना ही एकमात्र रास्ता है | विकसित चेतना मानव परम्परा में मानवत्व सहज वैभव का स्रोत है | ज्ञान नित्य विद्यमानहै | अध्ययन विधि से, साधना विधि से, इन दोनों विधियों से मानव ज्ञान सम्पन्न होना सम्भव है | साधना

विधि जिज्ञासा प्रधान होता है, अध्ययन केवल अभ्यासपूर्वक होता है | अभ्यास का मतलब अभ्युदय के अर्थ में किया गया श्रम नियोजन अथवा अभ्युदय के अर्थ में नियंत्रित मानसिकता है | यही दो परिभाषा के आधार पर सार्थक होना देखा गया है |

विकसित चेतना विधि से जीने से भयमुक्त होना पाया गया है | भय का स्वरूप मानव में निहित अमानवीयता ही रह गया है | यद्यपि मानव जंगल युग से जीव भय, प्राकृतिक भय से पीड़ित होता रहा है | तभी किसी का महत्ता का गायन करने में समर्थ हुआ | मानव ज्ञानावस्था में होने का पहला परिचय यही है | जंगल युग से ही मानव ईश्वरीय महत्ता को जानने में असमर्थ रहा, या जाने नहीं रहा | यही स्थिति अत्याधुनिक विज्ञान युग में भी रही | मान्यताएं आदर्शवाद के साथ बना ही है | इसका प्रमाण में सभी समुदायों में पूजा स्थली, प्रार्थना स्थली बनी ही है | हर प्रकार से चित्रित पूजा, प्रार्थना स्थली भी प्रतीक ही है | प्रतीक प्राप्ति नहीं होती, इस बात का विवेचन हो चुका है |

मानव अपने पहचान को अथवा मानव अपने महत्ता का पहचान को अथवा उपयोगिता, पूरकता का पहचान का स्थिति में जागृति को अपनाना होता है | जब गाय और बाघ अपनी उपयोगिता, पूरकता को स्पष्ट किया है मानव अपनी उपयोगिता, पूरकता को स्पष्ट करना में अटका ही रहा | यह अटकाव तभी समाप्त होगा जब विकसित चेतना को मानव अपनाएगा | अर्थात मानवत्वपूर्ण मानव, देवत्वपूर्ण मानव, दिव्यत्वपूर्ण मानव जीना ही सम्पूर्ण समाधान है | इस प्रकार जीने के लिये कार्य रूप में, प्रकटन रूप में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्वपूर्वक जीना ही होगा | यह पवित्र मानव का अथवा पवित्र मानव परम्परा का स्वरूप होना पाया गया है, जीना भी देखा गया है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो !

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत